अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ

साधारण सभा बैठक, मैसूर (कर्नाटक)

27 व 28 दिसम्बर, 2008

महामंत्री प्रतिवेदन

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ की मैसूर (कर्नाटक) में सम्पन्न होने जा रही साधारण सभा बैठक में उपस्थित माननीय राष्ट्रीय पदाधिकारी, क्षेत्र प्रमुख, राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्यगण, सम्बद्ध राज्य एवं विश्वविद्यालय संगठनों से सम्मिलित संभागी सदस्य बन्धु/भगिनी का मैं हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ। दुर्ग (छत्तीसगढ़) में 28 दिसम्बर 2005 को निर्वाचित वर्तमान कार्यकारिणी ने विगत तीन वर्षों में राष्ट्रीय परिदृश्य में घटित अनेकानेक घटनाओं को दृष्टिगत रखकर संगठन के कार्यों को विभिन्न स्तरों पर सम्यक रूप से वृद्धिगत कर, एक सफल यात्रा करते हुए प्रसन्नता हो रही है। बेशक, एक शिक्षक संगठन के नाते सामने मुंह बायें खड़ी चुनौतियों, संभावनाओं एवं समाधान के सकारात्मक प्रयासों को सामने रख उनसे लोहा लेते हुए हम आगे बढ़े हैं परन्तु इतने से समाधान भी नहीं हैं क्योंकि हमें सदैव कर्त्तव्य पथ का स्मरण रख अपना कदम आगे की ओर बढ़ाते जाना है **'जो समय को दे चुनौती वीर होते हैं'** उक्ति हमें उत्साहित करती है, प्रेरणा देती है। स्वातंत्र्य संग्राम के समय नेताजी सुभाष चन्द्र बोस द्वारा गठित आजाद हिन्द सेना के सैनिकों का मार्गदर्शक गीत **कदम-कदम बढ़ाये जा, खुशी के गीत गाये जा। ये जिंदगी है कौम की, कौम पर लुटाये जा॥** जैसे प्रेरक गीत हमें सदैव पथ प्रदर्शित कर राह दिखाते हैं। अस्तु, गत तीन वर्षों के विभिन्न चरणों/प्रयासों को हम निम्न प्रकार देख सकते हैं।

संघर्षात्मक कार्यक्रम

शिक्षा एवं शिक्षक की समस्याओं को लेकर 10 दिसम्बर 2007 को माननीय प्रधानमंत्री को एक 21 सूत्री ज्ञापन सोंपा गया। इसी ज्ञापन को राज्यशः सम्बद्ध संगठनों ने 17 दिसम्बर 2007 को राज्य के मुख्यमंत्री एवं महामहिम राज्यपालों के माध्यम से प्रधानमंत्री जी को भेजा। इसी प्रकार से उच्च शिक्षा संवर्ग की मांगों को लेकर मानव संसाधन विकास मंत्री एवं यू.जी.सी. को ज्ञापन दिया गया। इस सम्बन्ध में केन्द्र सरकार की उदासीनता को ध्यान में लेकर देश भर के सभी सम्बद्ध संगठनों की भारी माँग के प्रकाश में संगठन ने लोक सभा के बजट सत्र के द्वितीय चरण में संसद के समक्ष जन्तर मन्तर पर 25 अप्रेल 2008 को 21 राज्यों के चुनिन्दा प्रतिनिधियों ने गर्मी की परवाह न करते हुए सांकेतिक धरना देकर शिक्षा और शिक्षक के प्रति यूपीए सरकार की उदासीनता का विरोध कर इस ओर केन्द्र सरकार का ध्यान आकृष्ट कर उसके समाधान की अपेक्षा की।

राष्ट्रीय अधिवेशन

प्रति तीन वर्ष में एक बार सम्पूर्ण देश के शिक्षकों का एक स्थान पर आकर शिक्षा और शिक्षकों के लिए कार्यरत बन्धुओं के संगठित स्वरूप का दिग्दर्शन कराने हेतु 26 से 28 दिसम्बर 2006 को आगरा (उ.प्र.) में संगठन का तृतीय राष्ट्रीय अधिवेशन आयोजित हुआ। प्रभावी व्यवस्थाओं के साथ 1350 से भी अधिक सम्भागी बन्धुओं की उपस्थिति में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह माननीय मोहनराव भागवत जी की प्रेरणादायी उपस्थिति एवं मार्गदर्शन तथा उद्घाटन सत्र में छत्तीसगढ़ के माननीय मुख्यमंत्री श्री रमण सिंह तथा समापन में राजस्थान सरकार के तत्कालीन गृहमंत्री श्री गुलाबचन्द कटारिया की उपस्थिति उत्साह प्रदान करने वाली थी। इस अधिवेशन में विद्याभारती के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री ब्रह्मदेव शर्मा (भाई जी), स्वदेशी जागरण मंच के स्वाध्याय मण्डल के प्रमुख डॉ. भगवती प्रकाश शर्मा द्वारा मार्गदर्शन तथा स्व. श्री अधीश जी का कार्यकर्त्ताओं को प्रेरक सानिध्य प्राप्त हुआ ।

राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठकें

संगठन की राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठकों का आयोजन व्यवस्थित रूप से क्रमशः (1) 9-10 अप्रेल, 2006 को भोपाल (म.प्र.) में (2) 26-27 अगस्त, 2006 को बैंगलोर (कर्नाटक) में (3) राष्ट्रीय अधिवेशन से पूर्व 26 दिसम्बर

2006 को आगरा (उ.प्र.) में (4) 7, 8 अप्रेल, 2007 को वडौदरा (गुजरात) में (5) 31 अगस्त व 1 सितम्बर, 2007 कन्याकुमारी (तमिलनाडु) में (6) 26 दिसम्बर 2007 को मेंगलोर (कर्नाटक) में (7) 25 से 27 अप्रेल 2008 को दिल्ली में (8) 30-31 अगस्त 2008 को फोंडा (गोवा) में तथा (9) 27 दिसम्बर, 2008 को मैसूर (कर्नाटक) में सम्पन्न हुई। देश भर के कार्य का सम्यक चित्र तथा एक ही भावना से कार्य करने का मन इनसे बना है। देशभर को शिक्षकों को योग्य दिशा में राष्ट्रीय दृष्टिकोण को साथ लेकर चलने में ये बैठकें सफल हुई हैं ऐसा मेरा विश्वास है।

संवर्गशः बैठक/ सम्मेलन

उच्च शिक्षा संवर्ग- 12-13 फरवरी, 2006 में उच्च शिक्षा संवर्ग का राष्ट्रीय सम्मेलन दिल्ली में सम्पन्न हुआ। जिसमें 14 राज्यों से 125 कार्यकर्ता, 40 विश्वविद्यालय संगठनों से संभागी थे। इसी प्रकार 28-29 जुलाई, 2007 को जयपुर में एक और उच्च शिक्षा का राष्ट्रीय सम्मेलन सम्पन्न हुआ। इसमें देश भर के 9 राज्यों से 25 विश्वविद्यालयों के 116 बन्धुओं ने भाग लिया। इस अवसर पर सौभाग्य से रा. स्व. संघ के सह सरकार्यवाह एवं संगठन के मार्गदर्शक माननीय सुरेश जी सोनी का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। देश भर में कार्य विस्तार की दृष्टि से जम्मू, गुजरात, बिहार, कर्नाटक एवं महाराष्ट्र राज्य के नये विश्वविद्यालय संगठन सम्बद्ध हुए।

प्राथमिक संवर्ग-प्राथमिक संवर्ग की वडौदरा एवं गोवा बैठकें राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक के पश्चात् आयोजित की गई। आगरा अधिवेशन के समय संवर्गशः भी पर्याप्त विचार विमर्श होकर कार्य वृद्धि हेतु योजना की गई।

माध्यमिक संवर्ग-राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठकों में ही संवर्गशः विचार-विमर्श कर कार्य को गति देने की कार्ययोजना बनाई गई।

महिला संवर्ग- कन्याकुमारी (तमिलनाडु), चित्रकूट (म. प्र.) तथा बैंगलोर में महिला संवर्ग की सम्पन्न छोटी टोली की बैठकों में विचार विमर्श कर क्रियान्वयन की योजना बनाई गई।

चिन्तन बैठक

गत तीन वर्षों में दो प्रकार की चिन्तन बैठकों की योजना बनी। प्रथम बैठक 23-25 जून 2006 को सूरत (गुजरात) में सम्पन्न हुई । जिसमें 18 कार्यकर्ता सम्मिलित हुए। इसमें 5 विषयों पर विस्तृत चर्चा तथा दो आगामी कार्यक्रमों के सम्बन्ध में सामान्य चर्चा रही। इसी प्रकार संगठन की स्थापना के 20 वर्षों के पश्चात् संगठन के विभिन्न पहलुओं पर समीक्षा तथा आगामी दिशा के बारे में 1 व 2 नवम्बर, 2008 को 34 कार्यकर्त्ताओं की एक बैठक भोपाल में सम्पन्न हुई। संगठनात्मक कार्यक्रमों के सम्बन्ध में तथा कार्यकर्ताओं के कार्यव्यवहार जैसे विभिन्न विषयों पर चर्चा कर आये हुए सुझावों को आपके समक्ष मैसूर बैठक में चर्चा के लिए लाया गया है। जिसके क्रियान्वयवन के पश्चात् संगठन अपने व्यापक प्रभाव को प्राप्त करेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

कार्यकर्त्ता अभ्यास वर्ग

संगठन का प्रारम्भ से ही आग्रह रहा है कि प्रतिवर्ष नवीन कार्यकर्त्ता जिम्मेदारी लेकर अपने कार्य के साथ जुड़ें। ऐसे नवीन तथा पुराने बन्धुओं का राज्यशः तथा केन्द्र का अलग से कार्यकर्त्ता अभ्यास वर्गों का आयोजन प्रारम्भ हुआ है। अ.भा. स्तर का अभ्यास वर्ग 27-28 दिसम्बर, 2007 को मैंगलूर (कर्नाटक) में सम्पन्न हुआ। जिसमें रा. स्व.संघ के परिवार प्रबोधन (कुटुम्ब व्यवस्था) के अखिल भारतीय प्रमुख माननीय श्री एन. कृष्णाप्पा जी का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। कार्यकर्त्ताओं को संवाद के माध्यम से समाधान कारक तथा प्रेरणादायक वातावरण प्राप्त हुआ।

वार्षिक कार्य योजना

अ.भा. राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ का कार्य व्यवस्थित चले एतदर्थ प्रतिवर्ष संगठन के '**वार्षिक पंचाग**' का निर्धारण करने के लिए 7-8 अप्रैल 2007 को भोपाल की राष्ट्रीय कार्यकारिणी में यह विषय सभी के समक्ष लाया गया जिसे सभी ने स्वीकृत कर अब वार्षिक बैठक कर अधिकांश राज्यों में इसकी अनुपालना होना सुनिश्चित हो रहा है।

कार्य विस्तार

जम्मू-कश्मीर, हरियाणा प्रदेश एवं गुजरात के प्राथमिक, माध्यमिक संवर्ग में नवीन कार्य की शुरूआत हुई। उत्तराखण्ड में कार्यकारिणी बनाकर कार्य व्यवस्थित होने की प्रक्रिया में है। झारखण्ड में संस्कृत शिक्षकों के महासंघ का संबद्धता लेकर कार्य के साथ जुड़ना, महाराष्ट्र में मुम्बई वि. वि., नागपुर मेडीकल वि. वि., गुजरात में सूरत, वडौदरा के

वि. वि., कर्नाटक में मैसूर वि. वि, बिहार के दो विश्वविद्यालय, जम्मू का कृषि वि. वि., उत्तर प्रदेश के चार विश्वविद्यालयों की सम्बद्धता, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय की लाइब्रेरियन स्टडी सर्किल, नागपुर विद्यापीठ सेवक संघ ने नवीन सदस्यता ग्रहणकर अपने कार्य विस्तार में सहभाग किया है। इसी प्रकार अंडमान-निकोबार द्वीप में दिसम्बर, 2008 से ही संगठन के अतिरिक्त महामंत्री श्री अजीत बिश्वास के प्रवास के उपरान्त वहाँ कार्य प्रारम्भ हुआ है।

प्रस्ताव

संगठन विभिन्न राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठकों में शिक्षा एवं शिक्षकों की समस्याओं, समाज जीवन एवं देशहित के विषयों पर प्रस्तावों के माध्यम से अपना दृष्टिकोण प्रकट करता रहा है। 9-10 अप्रैल, 2006 को भोपाल (मध्यप्रदेश) की राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक में दो प्रस्ताव -1 मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति, 2. योग एवं अध्यात्म की शिक्षा पाठ्यक्रमों में समाविष्ट हो। 26-27 अगस्त, 2006 को बैंगलोर कर्नाटक की राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक में 6 प्रस्ताव क्रमशः 1. इतिहास का विकृतिकरण, 2. वन्देमातरम गीत की शताब्दी पर गायन का विवाद, 3. छटे वेतनमान आयोग के गठन हेतु प्रस्ताव, 4. केरल में रक्षा सूत्र बांधने वाले कॉलेज प्राध्यापक पर एस.एफ.आई. की करतूत की निन्दा, 5. शिक्षा के अधिकार बिल के पारित न होने का विरोध तथा 6. यूजीसी की वेतनमान समिति के गठन के प्रस्ताव रखे गये। 26 दिसम्बर, 2006 को आगरा में सम्पन्न राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में 6 प्रस्ताव पारित किये गये। 25 से 28 अप्रैल, 2008 को दिल्ली में सम्पन्न राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक में राष्ट्रीय ज्ञान आयोग की रिपोर्ट के आधार पर एक प्रस्ताव पारित किया गया। गत 30-31 अगस्त 08 को फोंडा (गोवा) बैठक में दो प्रस्ताव जिसमें प्रथम सच्चर कमेटी की रिपोर्ट तथा द्वितीय प्राथमिक शिक्षण का माध्यम मातृभाषा में हो, रखे गये।

प्रवास

अखिल भारतीय पदाधिकारियों के निर्धारित कार्यक्रमों हेतु प्रवास निश्चित होने पर प्रवास सम्पन्न हुए है। राष्ट्रीय अध्यक्ष, महामंत्री, संगठन मंत्री, क्षेत्र प्रमुखों के पर्याप्त प्रवास के साथ-साथ राष्ट्रीय उपाध्यक्ष : उच्च शिक्षा संवर्ग, सचिव- उ.शि. संवर्ग एवं कोषाध्यक्ष के द्वारा प्रवास सम्पन्न हुए। कार्यकर्त्ताओं की संभाल, कार्यक्रमों के लिए तथा संगठन के निचले स्तर तक विस्तार की आवश्यकताओं की अपेक्षानुसार संगठन के प्रत्येक पदाधिकारियों के द्वारा अधिक प्रवास की अपेक्षा है। साथ ही इस सम्बन्ध में बनने वाली नयी रचना में इस पर अधिक ध्यान दिया जायेगा, मुझे ऐसा विश्वास है।

जन जागरण अभियान

प.पू. श्री गुरुजी की जन्मशति के अवसर पर संगठन द्वारा यूपीए सरकार द्वारा पाठ्यक्रम में विसंगती पूर्ण बदलाव के विरोध में अभिभावक, शिक्षाविद्, शिक्षक एवं विद्यार्थियों के मध्य जाकर अनुचित बदलाव तथा उसकी जगह सम्यक सुझाव देने के लिये शिक्षण सत्र 2006-07 में सभी राज्यों में पत्रक (फोल्डर) वितरण, संगोष्ठी, पत्रकारवार्ता तथा सभी इकाईयों में सम्पन्न विभिन्न कार्यक्रमों में इस विषय को प्रभावी ढंग से रखा गया।

शिक्षा बचाओ आंदोलन

संगठन ने केन्द्र स्तर पर बने शिक्षा बचाओ आंदोलन समिति एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के आह्वान पर समय-समय पर सम्बद्ध राज्य संगठनों के माध्यम से विभिन्न विषयों को लेकर राज्य स्तर पर धरना, प्रदर्शन, रैली, पुतला दहन, ज्ञापन, संगोष्ठी आदि सम्पन्न कर अपना योगदान देता रहा है।

कर्तव्य बोध दिवस

अखिल भारतीय स्तर पर शिक्षक के प्रति पूर्व की भांति सम्मान का प्रभाव प्रकट हो, शिक्षक अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक होकर कार्य करने की भावना जगाने के लिए संगठन की सबसे नीचे की इकाई तक 'कर्तव्य बोध' दिवस का आयोजन 12 जनवरी स्वामी विवेकानन्द जयन्ती से लेकर 23 जनवरी नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की जयंती के मध्य प्रतिवर्ष सम्पन्न किये गये हैं। सभी राज्यों में क्रमशः इससे समाज व प्रशासन स्तर पर शिक्षक के प्रति सम्मान का भाव बढ़ता दिखाई देता है। अभी इसको और प्रभावी करने की आवश्यकता है।

नववर्ष शुभेच्छा

भारतीय नव वर्ष विज्ञान सम्मत है। यह बात अनेक शोधों से प्रकट हुई है। इस तिथि से पृथ्वी की उत्पत्ति से लेकर अनेक महापुरुषों की जन्म तिथि भी जुड़ी है। भारतीय नववर्ष का समाज में स्मरण बढ़कर उसका चलन/ प्रयोग

अधिकाधिक मात्रा में हो एतदर्थ संगठन के प्रत्येक स्तर पर शिक्षक, शिक्षाविद्, शिक्षाप्रबन्धन तथा समाज को शुभेच्छा संदेशों के माध्यम से इसके गौरव का स्मरण तथा मण्डन किया जाता है। इसके साथ ही संगठन अपने सामर्थ्य तथा समाज के सहयोग से विभिन्न आयोजन जैसे - प्रभात फेरी, नव वर्ष की पूर्व संध्या पर कार्यक्रम, संगीत सभा, कवि सम्मेलन, सांस्कृतिक संध्या, नववर्ष मेला, जुलूस, चौराहे सजाना, मंगल गीत गायन, राहगिरों को शुभेच्छा देना तथा विभिन्न स्पर्धायें आयोजित कर धूमधाम से नववर्ष का स्वागत करता है।

प्रकाशन

संगठन के परिचय के लिए हिन्दी और अंग्रेजी में **'परिचय और कार्य व्यवहार'** तथा **'An Introduction of ABRSM'** पुस्तकें प्रकाशित कर देशभर के विभिन्न राज्यों में शिक्षक कार्यकर्त्ताओं के साथ अपने कार्य को समझने, जानने वाले बन्धुओं को स:शुल्क पुस्तक उपलब्ध कराई गयी। इसी प्रकार राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय नरहरि जी द्वारा लिखित पुस्तक **'शिक्षा: दृष्टिकोण और दिशा'** तथा **'A Vision & Direction to Education'** को बड़ी मात्रा में प्रकाशित कर स:शुल्क वितरण हुआ। 1857 के स्वातंत्र समर के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में **'1857 का स्वातंत्र संग्राम: प्रश्नोत्तर रूप में'** पुस्तक प्रकाशित हुई। इसका उपयोग विद्यार्थियों की प्रतियोगिता के माध्यम से स्वातंत्र समर की जानकारी दी गई। इसी प्रकार तृतीय राष्ट्रीय अधिवेशन के अवसर पर **'शिक्षा नवोन्मेष'** स्मारिका का तथा 5 सितम्बर 2008 को डॉ. एस. राधाकृष्णन के जन्मदिवस पर **'शिक्षा: अंधेरे से उजाले की ओर'** स्मारिका का प्रकाशन किया गया। जिसका सभी ओर व्यापक स्वागत हुआ।

शैक्षिक मंथन मासिक

संगठन के कार्यकलापों के साथ-साथ शैक्षिक जगत में राष्ट्रीय विचारों का महत्व बढ़े एतदर्थ जनवरी, 2007 से 'शैक्षिक संवाद' तथा अप्रैल 2008 से आर.एन.आई. द्वारा स्वीकृत टाईटल से 'शैक्षिक मंथन' मासिक पत्रिका का प्रकाशन जयपुर से किया जा रहा है। शैक्षिक मंथन को सभी ओर से भारी प्रतिसाद/ समर्थन मिला है। धीरे-धीरे शैक्षिक जगत में **शैक्षिक मंथन** अपना स्थान बना रहा है।

कार्य की आवश्यकताओं की दृष्टि से उपरोक्त प्रयास अपर्याप्त दिखाई देते हैं। मैं आशा करता हूँ कि आगामी दिनों में हम सभी अपनी भूमिका निश्चित कर कार्य में जुटेंगे तथा अपने समक्ष वैश्विक चुनौतियों के मुकाबले हेतु हमें और अधिकाधिक प्रयास करने होंगे। भारत का भाग्योदय समवेत प्रयासों से ही अपने हाथों (शिक्षकों) होना है। माँ भारती के आह्वान पर अपने प्रयत्नों की पराकाष्टा कर कार्य को आगे बढ़ायें, आपके श्री चरणों में यही प्रार्थना है।

जयतु भारतम् ।

भवदीय

(महेन्द्र कपूर)
महामंत्री